2019(1) eILR(PAT) HC 1
पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधिकरण में

आपराधिक अपील (डी. बी.) संख्या 1345/2017

पीएस वाद सं.-118 वर्ष 1999 थाना-फतेहपुर जिला-गया से उत्पन्न

=====

तेतारी देवी, पत्नी-स्वर्गीय मैनेजर यादव ग्राम कटियोंध, टोला- विजय नगर, थाना फतेहपुर, जिला गया
के निवासी

.....अपीलार्थी

बनाम्

1. बिहार राज्य
2. रोहन यादव पिता-स्वर्गीय पति यादव
3. रतू यादव, पिता-स्वर्गीय पति यादव,
4. अर्जुन यादव, पिता-स्वर्गीय पति यादव।
5. पूजा यादव, पिता-स्वर्गीय पति यादव
6. विजय यादव, पिता-श्री सचो यादव.
7. राम विलास यादव, पिता-श्री नारैन यादव

सभी विजय नगर, थाना फतेहपुर, जिला गया के निवासी।

8. प्रभु यादव, पिता-सोनू यादव पुत्र, छोटकी धारहरा, थाना फतेहपुर, जिला गया के निवासी

.....प्रतिवादीगण

=====

भारतीय दंड संहिता - धारा 302/34 तथा 201/34

यह अपराधिक अपील विद्वान अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश-I, गया द्वारा बरी किये जाने के फैसले के खिलाफ दायर की गई।

निर्णित किया गया कि अपीलार्थी-मृतक की माँ है, और वह पीडित के दायरे में आती है, अतः उसे अपील दायर करने का अधिकार है।

निर्णित किया गया कि अभियोजन पक्ष अन्वेषक के साथ-साथ डॉक्टर का परीक्षण करने में विफल रहा है तथा शव परीक्षण तथा मृत्यु समीक्षा रिपोर्ट आदि को अभिलेख पर लाने में भी विफल रहा, हलांकि अभियोजन पक्ष को उपरोक्त दस्तावेज प्रस्तुत करने का प्रयास अवसर दिया गया था।

निचली अदालत के वरी के आदेश को बरकरार रखा गया।

[पारा 2,6,7 और 8]

आपराधिक अपील (डी. बी.) संख्या 1345/2017

पीएस वाद सं.-118 वर्ष 1999 थाना-फतेहपुर जिला-गया से उत्पन्न

तेतारी देवी, पत्नी-स्वर्गीय मैनेजर यादव ग्राम कटियोंध, टोला- विजय नगर, थाना फतेहपुर, जिला गया के निवासी

.....अपीलार्थी

बनाम्

1. बिहार राज्य
2. रोहन यादव पिता-स्वर्गीय पति यादव
3. रतू यादव, पिता-स्वर्गीय पति यादव,
4. अर्जुन यादव, पिता-स्वर्गीय पति यादव।
5. पूजा यादव, पिता-स्वर्गीय पति यादव
6. विजय यादव, पिता-श्री सचो यादव.
7. राम विलास यादव, पिता-श्री नारैन यादव

सभी विजय नगर, थाना फतेहपुर, जिला गया के निवासी।

8. प्रभु यादव, पिता-सोनु यादव पुत्र, छोटकी धारहरा, थाना फतेहपुर, जिला गया के निवासी

.....प्रतिवादीगण

उपस्थिति:

अपीलार्थी के लिए: श्री शेख अरकान अहमद

राज्य के लिए : श्री अश्विनी कुमार सिन्हा, ए.पी.पी.

गणपूर्ति: माननीय न्यायमूर्ति हेमंत कुमार श्रीवास्तव

एवं

माननीय न्यायमूर्ति राजेंद्र कुमार मिश्रा

मौखिक निर्णय

(द्वारा: माननीय न्यायमूर्ति हेमंत कुमार श्रीवास्तव)

.तिथि: 09-01-2019

1. अपीलार्थी की ओर से उपस्थित विद्वान अधिवक्ता तथा अपर लोक अभियोजक को राज्य की ओर से 2018 की आई. ए. संख्या 152 ग्रहण करने के बिंदु पर और हमारे विचार में, इस आपराधिक अपील का निपटारा प्रवेश स्तर पर ही किया जा सकता है।

2. 2018 का आई. ए. सं. 152 अपीलार्थी-आवेदक की ओर से दायर किया गया है, जो मृतक की मां होती है, और वह पीड़ित के दायरे में आती है। इसलिए, उसे बरी किए जाने के फैसले के खिलाफ अपील दायर करने का अधिकार है। तदनुसार, 2018 का आई. ए. 152 की अनुमति है और अपीलार्थी-आवेदक को इस आपराधिक अपील को आगे बढ़ाने की अनुमति है।

3. उपरोक्त तरीके से, 2018 की आई. ए. संख्या 152 का निस्तारण किया जाता है।

4. यह आपराधिक अपील 2005 (एस. जे.)/2016 के 198 के सत्र विचारण संख्या 121 में विद्वान अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश-1, गया द्वारा पारित दिनांक 06.07.2017 के बरी किए जाने के फैसले के खिलाफ की गई है, जिसके तहत उन्होंने आई. पी. सी. की धारा 302/34 और 201/34 के तहत दंडनीय अपराधों के लिए उनके खिलाफ लगाए गए आरोपों से प्रतिवादी संख्या 1 को बरी कर दिया था।

5. 1999 का फतेहपुर थाना मामला सं. 118 अपीलार्थी के फर्द बयान के आधार पर दर्ज किया गया था और तदनुसार, उत्तरदाता सं. 2 से 8 पर मुकदमा चलाया गया। आई. पी. सी. की धारा 302/34 और 201/34 के तहत दंडनीय अपराधों के लिए उनके और एक अन्य सह-आरोपी के खिलाफ 03.03.2005 को आरोप गठन किया गया था। विचारण मुकदमे के दौरान अभियोजन पक्ष ने कुल मिलाकर अभियोजन पक्ष के चार गवाहों का परीक्षण किया और कुछ दस्तावेजों को भी पेश किया। उत्तरदाता संख्या 2 से 8 के बयान को आपराधिक दंड संहिता की धारा 313 के तहत दर्ज किया गया था और बाद में, विद्वान विचारण न्यायालय ने अभिलेख पर उपलब्ध सामग्री का अलवलोकन कर बरी करने का आक्षेपित निर्णय पारित किया जिसके खिलाफ यह अपराधिक अपील लाया गया है।

6. यहाँ यह ध्यान रखना उचित है कि उत्तरदाता संख्या 2 से 8 के खिलाफ आरोप 03.03.2005 को गठन किया गया था और अभियोजन पक्ष के साक्ष्य को वर्ष 2017 में कभी यानी 12 साल से अधिक समय के बाद बंद कर दिया गया था। हालांकि, आक्षेपित फैसले के अवलोकन से यह प्रतीत होता है कि अभियोजन पक्ष अन्वेषक के साथ-साथ डॉक्टर का परीक्षण करने में विफल रहा और शव परीक्षण रिपोर्ट, तथा मृत्यु समीक्षा रिपोर्ट आदि को अभिलेख पर लाने में भी विफल रहा, हालांकि अभियोजन पक्ष को उपरोक्त दस्तावेज प्रस्तुत करने का पर्याप्त अवसर दिया गया था और इसके अलावा, विद्वत ट्रायल कोर्ट ने गैर-जमानती वारंट आदि जारी करके जांच अधिकारी और डॉक्टर की उपस्थिति प्राप्त करने का प्रयास किया, लेकिन सभी व्यर्थ गए।

7. आक्षेपित फैसले के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि अभि. गवाह सं.-1 एक औपचारिक गवाह है, जबकि शेष तीन अभियोजन गवाहों ने विचारण न्यायालय के समक्ष अभियोजन मामले का समर्थन किया था, लेकिन उन्होंने विचारण के दौरान अपने बयान में सुधार किया क्योंकि उन्होंने जांच अधिकारी के समक्ष उन बयानों के संबंध में दावा नहीं किया था जो उनके विचारण न्यायालय कोर्ट के समक्ष दिए गए हैं और उपरोक्त तथ्य को ध्यान में रखते हुए, विद्वत विचारण न्यायालय ने बरी करने का फैसला सुनाया। इसके अलावा, विद्वत विचारण न्यायालय ने अभियोजन मामले की अन्य कमजोरियों पर भी ध्यान दिया और हमारे विचार में, विद्वत ट्रायल कोर्ट ने दोषमुक्त करने का निर्णय सही ढंग से पारित किया और दोषमुक्त करने के आक्षेपित निर्णय में हस्तक्षेप करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

8. उपरोक्त चर्चाओं के आधार पर, यह आपराधिक अपील ग्रहण स्तर पर ही खारिज की जाती है।

(हेमंत कुमार श्रीवास्तव, न्यायमूर्ति)

(राजेंद्र कुमार मिश्रा, न्यायमूर्ति)

शहज़ाद/-

खंडन (डिस्क्लेमर)- स्थानीय भाषा में निर्णय के अनुवाद का आशय, पक्षकारों को इसे अपनी भाषा में समझने के उपयोग तक ही सीमित है और अन्य प्रयोजनार्थ इसका उपयोग नहीं किया जा सकता । समस्त व्यवहारिक, कार्यालयी, न्यायिक एवं सरकारी प्रयोजनार्थ, निर्णय का अंग्रेजी संस्करण ही प्रमाणिक होगा साथ ही निष्पादन तथा कार्यान्वयन के प्रयोजनार्थ अनुमान्य होगा।